माहेश्वर की कविता

रोशनी के बच्चे

मत करो उन पर दया
मत कहो उन्हें-
'बेचारी गरीब जनता'
या, इसी तरह कुछ और

मत करो उनकी
यन्त्रणाओं का बयान
छेड़ो मत उनकी सदियों पुरानी
भूख और बीमारी की लम्बी दास्तान
मत कहो तबाही-बदहाली-
लाचारी और मौत
जो कि निरे शब्द हैं
उनकी जागृत जिजीविषा के सामने
टसुए मत बहाओ
अगर उन्हें समझा जाता है
समाज का तलछट
और फेंकी जाती है मदद
मुआवजे के बतौर

वे झेल आए हैं इतिहास की गुमनामी
वे वर्तमान में खड़े हैं
भविष्य में जाएंगे
उन्हें नहीं चाहिए
हमदर्दी की हरी झण्डी

उनकी नसों में उर्वर
धरती का आवेग है
उनके माथे पर चमकता है
जांगर का जल
उनके हाथ की रेखाओं से
रची जाती है सभ्यता की तस्वीर
उनकी बिवाइयों से फूटते हैं
संस्कृति के अंकुर
उनके पास उनकी 'होरी' है
'चैता', 'कजरी' और 'बिरहा' है
हज़ारों हत्याकाण्डों के बावजूद
सही-सलामत है उनका वजूद-
उनकी शादी-गमी
उनके पर्व-त्यौहार
उनका हंसना-रोना
जीना-मरना
सोना-जागना
उठना-बैठाना
पाखण्ड और बनावट
से परे है उनका होना

वे स्वर्ग से निर्वासित आदम हैं
उनके निर्वासन से डरता है स्वर्ग
वे रोशनी के बच्चे हैं
सुबह से शाम तक
पूरब से पश्चिम तक
वे ढोते हैं सूरज अपनी पीठ पर

मत करो मैली उनकी राह
अपने मन के घनेरे अंधकार से
मत थोपो उनके संसार पर
अपना संसार

टिकटें बंटते ही खुली पोल 'अनुशासित' पार्टी की

सोनिया और नटवर

पिछले दिनों सोनिया और नटवर यानी सोनिया गांधी और नटवर सिंह का प्रकरण काफ़ी चर्चा में रहा। चुनावों के बाद बुरी स्थिति से गुजर रही कांग्रेस पर पूंजीवादी प्रचार माध्यमों ने इस बहाने खूब चुटकी ली और प्रकारान्तर से मोदी और भाजपा के पक्ष में और प्रचार किया।

सोनिया गांधी किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं पर नटवर सिंह एक भूली-बिसरी शख्सियत बन गये हैं। नटवर सिंह दशकों से कांग्रेसी रहे हैं। वे पहले एक राजनयिक थे और बाद में मंत्री भी। संप्रग के पहले कार्यकाल में वे विदेश मंत्री थे।

लेकिन विदेश मंत्री के पद से उन्हें तब इस्तीफ़ा देना पड़ा जब पश्चिमी समाचार माध्यमों ने यह खुलासा किया कि नटवर सिंह के बेटे ने इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की इराक पर लगे प्रतिबंधों का उल्लंघन करने में मदद की थी। सद्दाम हुसैन ने प्रतिबंधों के बावजूद हथियार खरीदने की कोशिश की थी और इसके लिये 'ऑयल फार फूड' छूट का इस्तेमाल किया था। प्रतिबंधों के तहत इराक को यह छूट थी कि वह तेल बेचकर अनाज आयात कर ले। लेकिन इस तेल निर्यात का किसी और मद में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। तब पश्चिमी प्रचारतंत्र ने नटवर सिंह के बेटे के साथ तत्कालीन संयुक्त राष्ट्र संघ महासचिव कोफी अन्नान को भी इसमें घसीटा था। कोफ़ी अन्नान ने 2003 में इराक पर अमेरिकी आक्रमण का विरोध किया था।

जब इस मसले का खुलासा हुआ तो इसके बाद नटवर सिंह को विदेश मंत्री पछ से हटा दिया गया। यह तभी आशंका जाहिर की गयी थी कि यह खुलासा नटवर सिंह से छुट्टी पाने का तरीका था क्योंकि नटवर सिंह अमेरिकी साम्राज्यवादियों के हिसाब से नहीं चल रहे थे। अब नटवर सिंह ने इसी बात का खुलासा किया है कि बात वास्तव में ऐसी ही थी। उन्हें विदेश मंत्री पद से अमेरिकी साम्राज्यवादियों के कहने पर हटाया गया था। इसके लिये उनके बेटे के गोरख धंधे का इस्तेमाल किया गया था।

वास्तव में नटवर सिंह संप्रग सरकार के दूसरे ऐसे मंत्री थे जिन्हें अमेरिकी साम्राज्यवादियों की इच्छानुसार हटाया गया था। पहले मंत्री थे मणि शंकर अय्यर। वे तेल-गैस मंत्री थे और ईरान-भारत गैस पाइप लाइन सहित भारत के लिए स्वतंत्र ऊर्जा नीति की वकालत कर रहे थे।

अमेरिकी साम्राज्यवादियों के इशारे पर नटवर सिंह को विदेश मंत्री के पद से हटाया जाना कोई अजूबा नहीं था। गाहे-बगाहे ऐसा होता रहता है। अजूबा नटवर सिंह की ओर से था जो तब मामले की असली वजह पर चुप्पी साध गये थे। तब उन्होंने किताब तो क्या एक लेख लिखकर भी यह नहीं बताया कि असल में उनके बेटे का उनके ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया गया है।

इस चुप्पी की वजह थी। इतने सालों से राजनयिक सेवा में रहने के कारण नटवर सिंह यह बात अच्छी तरह जानते थे कि जो कुछ उनके साथ हुआ है वह अजूबा नहीं है। ऐसा होता ही रहता है। इसलिए इस पर बखेड़ा खड़ा करने के बदले बेहतर है कि इस पर चुप ही रहा जाये। वक्त गुजर जायेगा तथा नटवर सिंह के दिन लौट आयेंगे। बखेड़ा खड़ा करने पर ये दिन हमेशा के लिये चले जायेंगे।

लेकिन नटवर सिंह के दिन वापस नहीं लौटे और अब तो कांग्रेस की सरकार भी चली गयी। कांग्रेस की सरकार फिर से आने तक पता नहीं नटवर सिंह रहें या न रहें। ऐसे में कम से कम अपने दिल की भडांस तो निकाल ही लेनी चाहिए।

साथ ही इसमें एक संभावना भी निहित है। क्या पता कांग्रेस और सोनिया की ऐसी फजीहत होने से नरेन्द्र मोदी और भाजपा खुश हो जायें। यदि वे खुश हो गये तो नटवर सिंह और उनके वारिसों को कोई तोहफ़ा मिल सकता है।

रही सोनिया गांधी की बात तो अपनी इस तरह से किरकिरी किये जाने से उनका रंज स्वाभाविक है। लेकिन उनके द्वारा अपनी किताब लिखने की घोषणा इतनी स्वाभाविक नहीं है। यदि वे कोई किताब लिखती हैं तो उन्हें यह जरूर खुलासा करना चाहिए कि उन्होंने क्या-क्या- काले कारनामे किए।

उनकी ऐसी किताब का देश की जनता को इंतजार रहेगा।

-नागरिक

'आज़ादी' का दावेदार .....

पेज एक का शेष

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।